चंद्रप्रभ विधान

-:लेखकः-

आचार्य मुनि वसुनंदी

-:लेखकः-

आचार्य मुनि वसुनंदी

संपादक

मुनि ज्ञानानंद

प्रकाशकः

श्री सत्यार्थी मीडीया

ऊँ ह्रीं नमः

द्वितीय संस्करण : जुलाई 2017
प्रतियाँ : 10,000

चंद्रप्रभ विधान

-:लेखकः-

आचार्य मुनि वसुनंदी

मंगलाशीषः

प.पू. राष्ट्र ंतसिद्धांत चक्रवर्ती दि.श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज

प्रकाशकः

श्री सत्यार्थी मीडीया

मुद्रक :जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज''

मो. 9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे ।

आद्य वक्तव्य

आचार्य वसुनंदी मुनि

संसार का प्रत्येक प्राणी सुख शांति चाहता है और उसका प्रयास और पुरुषार्थ भी निरन्तर इसी दिशा में रहता है। किन्तु फिर भी आज तक न तो दुःखों का अंत ही हो पाया है और न ही सच्चे सुख की उपलब्धि। जब तक सच्चे देव, शास्त्र, गुरु व जिनधर्म के प्रति यथार्थ श्रद्धान नहीं होता तब तक सुख-शांति की प्राप्ति का समग्र प्रयास व पुरुषार्थ व्यर्थ ही होता है। सम्यक् दृष्टि जीव जिनेन्द्र भगवान की भक्ति स्तुति, पूजा वंदना आदि करके अपने कर्मों का क्षय करने में भी समर्थ हो जाता है। पूजा, भक्ति, स्तुति, वन्दना आदि करने से शुभास्रव सातिशय पुण्य का बंध, पाप कर्मों का संवर एवं पूर्व बद्ध कर्मों की निर्जरा होती है। सातिशय पुण्य की जनक भक्ति आदि करने से पाप प्रकृतियों का पुण्य प्रकृतियों में संक्रमण हो जाता है तथा पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग व स्थिति वृद्धि को प्राप्त होती है, पाप प्रकृतियों का अनुभाग व स्थिति बंध घट जाता है, पूर्वबद्ध कर्मों की उदीरणा भी भक्ति पूजा से सम्भव है। जिनेन्द्र भगवान की भक्ति पूजन आदि करने से परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। आचार्य भगवन् पूज्यपाद स्वामी अपर नाम देवनंदि महाराज समाधि भक्ति में लिखते हैं:-

एकापि समर्थेयं जिन भक्ति दुर्गतिं निवारयितुं।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।8।। स.भ.

अर्थः- एक जिन भक्ति भी दुर्गति का निवारण करने में समर्थ है तथा जिन भक्ति सातिशय पुण्य को देने वाली है, यह जिन भक्ति ही मुक्ति श्री को देने वाली है।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।19।। स.भ.

अर्थः- जिनेन्द्र भगवान की स्तुति करने से विघ्नों का, पापों का, शाकिनी, भूत, पिशाच आदि का भय, सर्पादि का विष भी स्वतः ही नष्ट हो जाता है।

जिणवर चरणांबुरुहं जे णमंति परम भक्ति रायेण।
ते जम्म वेलि मूलं खणंति वर भाव सत्थेण।।
(अ.प. आ. कुंद-कुंद स्वामी)

अर्थः- जिनेन्द्र भगवान के चरण कमलों में जो भव्य जीव परम भक्ति व अनुराग से युक्त होकर नमस्कार करते हैं, वे श्रेष्ठ भाव रूपी शस्त्र के द्वारा जन्म (संसार रूपी) वेल को नष्ट कर देते हैं।

भत्तीये जिणवराणं खीयदि जं पुब्ब संचियं कम्मं।
आइरिय पसाएण विज्जामंताय सिज्झंति।।
(मूलाचार, आ.कुन्द-कुन्द स्वामी)

अर्थः- जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति करने से पूर्व संचित कर्मों का क्षय होता है तथा भगवान की भक्ति के प्रसाद से विद्या-मन्त्रों की सिद्धि होती है। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य भगवन् श्री वीरसेन स्वामी जी धवला जी में लिखते हैं:-

विघ्ना प्रणश्यंति भयं न जातु, न दुष्ट देवाः परिलंघयंति।
अर्थान् यथेष्टाश्च सदा लभंते, जिननोत्तमानां परिकीर्तिनेन।।

अर्थः- जिनेन्द्र भगवन् की भक्ति, स्तुति व गुणोत्कीर्तन करने से विघ्नों का नाश होता है, भय कभी नहीं होता, दुष्ट देव कभी उपद्रव नहीं करते यथेष्ट पदार्थों की सदा प्राप्ति होती है।

"पूय फलेण तिलोय सुरपुज्जो होदि सुद्धमणो ।।रयणसार।।13।।

अर्थः- जो शुद्ध मन से जिनेन्द्र भगवान की पूजा करता है वह मनुष्य तीन लोक में देवों द्वारा पूज्यता को प्राप्त होता है।

"श्री चन्द्रप्रभ महा मण्डल विधान" नामक एक अत्यन्त उपयोगी कृति है,

यह कृति भव्य श्रावकों के लिए सर्व मनोरथों को पूर्ण करने वाली है, भव दुःखों का अंत करने में समर्थ है। इस विधान में आठ वलय हैं, इसमें पंच कल्याणकों के, सोलह स्वप्नों के फलों के ,चौंतीस अतिशयों के, मुनिराज के अट्ठाईस मूल गुणों के, बारह तप, दस धर्म व तीन गुप्तियों के अर्घ हैं तथा अष्ट प्रतिहार्य, अनंत चतुष्टय व सिद्धों के आठ गुणों के भी अर्घ हैं। भाव सहित पूजा भक्ति करने से भव्य जीवों को असीमित आनन्द की अनुभूति होती है। यह विधान श्रावकों के द्वारा विधेय है। सभी भक्तगणों को शुभाशीष, वे इस विधान से मोक्ष मार्ग के पथिक बनें। इस विधान के, सम्पादक व सहयोगी त्यागी व्रतियों को समाधिरस्तु धर्म वृद्धिरस्तु शुभाशीष।

''अलमति विस्तरेण''

श्री शुभमिती पौष सुदी सप्तमी
वी.नि.स. 2543वि.सं. 2073
श्री दि. जैन मंदिर कामां,
3 जनवरी 2017, मंगलवार
भरतपुर (राज.)

ॐ ह्रीं नमः
कश्चिदल्पज्ञ श्रमण सूरि
जिनचरणाम्बुज चचंरीक

श्री चन्द्रप्रभु विधान प्रारम्भ

स्थापना

श्री चन्द्र नाथ जिन देव पुण्य से, दर्श आपका पाया है।
भाव सहित जिन दर्शन से, मेरा मन अति हर्षाया है।।
दर्शन पूजन स्तुति से, जो अतिशय पुण्य कमाया है।
भव-भव में तव दर्शन पाऊँ, यही भाव मन आया है।।

दोहा

आह्वानन करता प्रभु, भक्ति वश मैं आज।
हृदय कमल मम आ बसो, चन्द्रप्रभु जिनराज।।

ॐ ह्रीं देहरास्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र अत्र
अवतर-अवतर संवोषट् इति आह्वाननं।
ॐ ह्रीं देहरास्थित, श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्र अत्र मम
सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणं

अथ अष्टक

राग-द्वेष से हो मलीन मैं, भव दधि में भटकाया हूँ।
वीतराग जिन शुद्ध दशा को, तुमसे पाने आया हूँ।।
निर्मल जल से धारा देकर, निज निर्मलता को प्राप्त करूँ।
जन्म जरा, मृत पूर्ण नाशकर, आज भवोदधि पार करूँ।।
ॐ ह्रीं श्री देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
भवाताप से तपा हुआ, निज शीतलता ना लखि पाया।
मोती, चन्दन चन्द्र किरण जल इनमें ही मैं भरमाया।।
ये पदार्थ तो तन को भी अब तक ना शीतल कर पाये।

चेतन की शीतलता पाने, चन्द्रप्रभु तव दर आये।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
जितने भी पद पाये अब तक, उन सबका ही नित नाश हुआ।
नहीं अभी तक मेरा भगवन्, शाश्वत पद में वास हुआ।।
अक्षत सम अक्षय श्रद्धा ले, नाथ, शरण में आया हूँ।
निज अक्षय पद को पा जाऊँ, यही भावना लाया हूँ।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।
पुष्पवास में वास किया पर, नहीं वासना तज पाया।
सुमन वास जिनदेव आस बिन, नहिं स्वभाव को लखि पाया।।
शुभ उपासना चन्द्रदेव की, करि उपास निज वास करूँ।
भक्ति सुमन ये तव पद अर्पित, मदन मोह का नाश करूँ।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।।
क्षुधा वेदनी ने हे भगवन्, भव-भव में हमें रुलाया है।
भव भोगों को भोग-भोग भी, चैन नहीं मिल पाया है।।
वैद्य समा हे चन्द्र प्रभु, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।
निज स्वभाव को पा जाऊँ उर, यही भावना लाया हूँ।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवैद्यं निर्व. स्वाहा।।
ये जड़ दीपक क्या चेतन के, अंधियारे को हर पायेगा।
शुद्ध स्वभाविक नित्य बोध का, क्या प्रकाश कर पायेगा।।
निज चैतन्य नन्त बुध पाने, को चरणों में आया हूँ।
हे चन्द्र नाथ तव पद आगे, ये घृत का दीप चढ़ाया हूँ।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय

मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।।
ये धूप दशांगी खेने से, बस बाह्य सुवासित होता है।।
कर्म नाश हो तव पूजन से, जो जिन शासित होता है।।
हे चन्द्रदेव सब कर्म रहित, शाश्वत पद तुमने पाया है।
उस अक्षय पद पाने को प्रभु , मेरा भी मन ललचाया है।।
ऊँ ह्रीं श्री देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्व. स्वाहा।।
जग के सब फल खा करके भी, मैं सफल नहीं हो पाया हूँ।
छल बल से पाकर फल मैं, नहिं निष्फलता खो पाया हूँ।।
हे चन्द्रनाथ तव चरण कमल में, उत्तम फल भेंट चढ़ाये हैं।
है मोक्ष महाफल ही शाश्वत, उसको ही पाने आये हैं।।
ऊँ ह्रीं श्री देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।।
निर्मल जल, चन्दन अक्षत शुभ, चरु दीप धूप फल लाया हूँ।
आठों का मिश्रण करके प्रभु, तव चरण चढ़ा हर्षाया हूँ।।
ये अर्घ मेरा स्वीकार करो, वसु सुगुण प्रकट होवें स्वामी।
भव-भव के बंध मिटे चन्दा, हम बनें शीघ्र अर्न्तयामी।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ निर्व. स्वाहा।।

दोहा

गर्भ जन्म कल्याणक शुभ, वैराग्य सुखों का द्वार।
दीक्षा केवल ज्ञान, शिव, सकल जगत हितकार।।

ऊँ ह्रीं श्री देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय महा अर्घं निर्व. स्वाहा।।

जयमाला

दोहा

चन्द्रनाथ द्युति चन्द्र सम, निष्कलंक सुखधाम।
श्रद्धा से भक्ति करें, लहे स्वात्म विश्राम।।
अष्टम तुम तीर्थेश जिन, महासेन के लाल।
शुद्ध हृदय से भक्ति वश, अब वरणूं जयमाल।।

श्री चन्द्र नाथ तुम जगत ईश, घट-घट के अन्तर्यामी हो।
नन्त चतुष्टय के धारी तुम, तीन लोक के स्वामी हो।।
हे नाथ! पूर्व भवों में भी कई बार मुनि पद पाये थे।
क्रोधादि भाव मिथ्यात्व कर्म, तुमने सब पूर्व नशाये थे।।
पद्मनाभ के भव में, शुभ, तीर्थंकर पद का बंध किया।
मानों तब से ही तुमने तो, निज मुक्ति का अनुबंध किया।।
तुम राग-द्वेष जेता बनके शुचि आत्म भाव संवारे थे।
अन्याय कर्म भी तव सम्मुख कायर बन दूर पधारे थे।।
तुम वीतराग सर्वज्ञ हितेशी, तीर्थंकर कहलाते हो।
हृदय विकाशक भव्य जीव को, सूरज सम अति भाते हो।।
नगर तिजारा में स्वामी, अति पावन देहरा थान भला।
जहाँ प्रकटे श्री चन्द्रनाथ जिन, गुरु दशमी श्रावण शुक्ला।।
था वीर मोक्षगत संवत शुभ, चौबीस शतक अरुतेरासी।
अभिजित भान ग्यारह पचास पे, जनता दौड़ी थी प्यासी।।
चन्द्रप्रभु के प्रकट समय में, मेघ घने नभ में छाये।
सुर गण ने मोद मनाकर के मोती सम बादल बरषाये।।
इसी घड़ी से आज तलक, यहाँ होते हैं अतिशय भारी।
कोई धन, सुत, स्त्री पाते, मिटे किसी की बीमारी।।

भूत प्रेत डाकिन शाकिन उपसर्ग उपद्रव नश जाते।
श्री चन्द्र प्रभु चरणों में आ,रोने वाले हँसकर जाते ।।
वैसे तो अतिशय प्रभुवर के, चहुँ ओर दिखाई देते हैं।
सोनागिर चन्दवाड़, बनारस शुभ नाम देहरा लेते हैं।।
श्री चंद्रप्रभुवर भक्ति से सब संकट ही मिट जाते हैं।
अत्यंत तीव्र सब पाप कर्म भी रवितमवत हट जाते हैं।।
समंतभद्र स्वामी को तुमने, चमत्कार यह दिखलाया।
सेवक का मान रखा तुमने, निज रूप पिण्डि में प्रकटाया।।
किसी एक अनगार संत का, मधु मेह विनशाया।
मनोकामना पूर्ण प्राप्तकर, जो कोई आया हरषाया।।
नहिं असंभव कुछ जग में, तव भक्त जिसे नहीं कर पाये।
तू सबको सब कुछ देता है, जो लेने वाला ले जाये।।
आत्म शांति उत्तम समाधि वा धर्म प्रभावना मैं चाहूँ।
दया, प्रेम, करुणा, मैत्री की, जिनवाक् सरित में अवगाहूँ।।
शुभ पुण्य उदय से हे चन्दा, मैं तेरे दर पर आया हूँ।।
अतंस में तेरे दर्शन कर, मैं आज सर्व निधि पाया हूँ।।

जयमाला अर्घ

चन्द्रप्रभु भगवान को, जो पूजे धरि ध्यान।
उसे स्वर्ग अरु मोक्ष के, मिले सकल वरदान।।
पूर्ण समर्पण भाव से, जो जिन पूज रचाय।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं नि.स्वाहा
प्रथम वलये पुष्पांजलि क्षिपेत्

प्रथम वलय

चैत्र वदी पंचम तिथि से, छह माह पूर्व सुर हर्षाये।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, धन पति ने रत्न शुभ वरसाये।।
चन्द्रपुरी नगरी अति सुन्दर, धनपति ने वहाँ बनाई थी।
जब गर्भ में प्रभु जी आये थे, लक्ष्मणा माता हरषाई थी।।
ऊँ ह्रीं चैत्र कृष्णा पंचम्यां गर्भ कल्याणक सहिताय देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।।१।।
कलि पौष एकादशी थी प्यारी, जब जन्म हुआ था मंगलदाय।
महासेन पितु मात लक्ष्मणा, दोनों मन में अति हरषाय।।
अभिषेक किया पाण्डुक शिल पर ऋषि खगेन्द्र अरु सुर नर आय।
पाकर पावन चरण आपके, सभी भव्य जन पूज रचाय।।
ऊँ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म कल्याण सहिताय देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेद्राय नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।।२।।
भव तन भोग विरागी बनकर, राग द्वेष परिहार किया।
विद्युत वा पतझड़ को लखकर, सर्वार्थ सुवन को गमन किया।।
पंचमुष्टि कच लोंच किये तब नाग भानि था अनुराधा।
मनः पयर्य भी हुआ प्रकट तब, निज में निज को आराधा।।
ऊँ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां तप कल्याणक सहिताय देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।
फल्गुन वदी सप्तमी के दिन, चार घातिया नाश किये।
लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान पान निज वास लिये।।

चौंतीस कोश के समवशरण की, रचना करी धनद ने आय।
उसी भाव से हम सब मिलकर, रहे आपको अर्घ चढ़ाय।।
ऊँ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवल ज्ञान सहिताय देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्व. स्वाहा।।४।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी के दिन, गिरि सम्मेद ललितवर कूट।
योग निरोधा एक माह का, गये कर्म अघाती छूट।।
अष्टम जिन ने अष्टम वसुधा, वसु विधि हनि वसु सुगुण लहे।
चन्द्रनाथ चन्द्रांक चरण लखि, भाव सहित हम शीश नये।
ऊँ ह्रीं फाल्गुन शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक सहिताय देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

महाअर्घ श्री फल चढ़ायें

गर्भ जन्म कल्याणक पूजन, गर्भ जन्म दुःख दूर करे।
तप कल्याणक तप का दाता, कर्म सभी चकचूर करे।।
ज्ञान महा कल्याणक जग में केवल बुध का दाता है।
मोक्ष-मोक्ष का दाता जिनवर, त्रिभुवन में इक त्राता है।।
ऊँ ह श्री देहरा स्थित श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय पंच कल्याणक प्राप्ताय महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

द्वितीय वलये पुष्पांजलि क्षिपेत्

द्वितीय वलय

सोलह स्वप्नों के फलों के अर्घ चढ़ायें

तर्जः- मेरी आरजू तो भगवन् .....

प्रथम स्वप्न में एक अनेकप, देखा मां ने सुखकारी।
अनेक जीव का पालक होगा, कहा स्वप्न फल हितकारी।।
गजराज समा वह शुभ गति धारक, जगत्पति बलशाली हो।
तव गुण पाने अर्घं चढ़ाऊँ, मम मन अति खुशहाली हो।।१।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या ऐरावत हाथी
प्रथम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय स्वप्न में महा वृषभ को, चन्द्र प्रभु जननी देखा।
अति उत्तम वह धवल वर्ण युत अष्ट पाद में शुभ रेखा।।
तीन लोक में परम गुरु हो, सबसे आदर पायेगा।
जो जिनचन्द्र की चरण पूजेगा, वह भवदधि तिर जायेगा।।२।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या वृषभ द्वितीय
स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

तृतीय स्वप्न में सिंह केशरी, मन भावन जननी देखा।
उछल कूद करता जाता वह दहाड़ रहा मद करि लेखा।।
नंत वीर्य का धारक होगा, यही स्वप्न फल बतलाया।
मानी का मद हारक होगा, सुनकर सबने सुख पाया।।३।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या सिंह
तृतीय स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

द्वि गज से अभिषिक्त आपने, देखी जो लक्ष्मी प्यारी।
तुरीय स्वप्न की अतिशय लीला, देखी जो जनमन हारी।।
पाण्डु शिला पर जिन शिशु का, अभिषेक इन्द्र करि हर्षित हो।
चन्द्र प्रभ जगदीश्वर स्वामी, तीन लोक से अर्चित हो।।४।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या लक्ष्मी चतुर्थ

स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

स्वप्न पांचवे में माता ने, देखी सुरभित दो माला।
तीन लोक में चर्चित होगा, मां तेरा सुत यश वाला।।
अनन्त ज्ञान दर्शन का धारी, लोका लोक निहारेगा।
भव्य जनों को भव सागर से वह खुद पार उतारेगा।।५।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या द्वय माला
पंचम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

कांतिमान सुधाकर तुमने देखा छठवें सपने में।
परम मुदित तुम हुई हो देवी, आज स्वयं तुम अपने में।।
परम कारुणिक, सुख दाता, निर्दोष सुधाकर नामी हो।
चरण कमल हम वन्दन करते, चन्द्र जगत के स्वामी हो।।६।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्दप्रभ जनन्या चन्द्रमा
षष्टम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

तेज पुंज अंशूमाली को, लखा सातवें सपने में।
हुआ प्रकाशित अंतस मां का, दिखा सूर्य जब अपने में।।
तीन लोक में विद्यमान अज्ञान तिमिर का हो हर्ता।
सम्यक् ज्ञान प्रकाशक होगा, जन-जन के हित का कर्ता।।७।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या सूर्य
सप्तम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

चंचल क्रीड़ा में रत देखा, तुमने सुभग मीन जोड़ा।
निस्सीम विषय भोगों में रत हो, आखिर में वह भी छोड़ा।।
अष्टम सपना अष्टम क्षिति के, सुख का अधिकारी कहता।
चन्द्र चरण का चातक भवि जन, भव दुःखों को नहिं सहता।।८।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या युगल मीन
अष्टम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

नवम स्वप्न में हे जिन जननी, स्वर्ण कलश शुभ देख लिये।
करे मनोरथ पूरण जग के विधि ने ऐसे लेख किये।।

जिन प्रभाव से हे मां जिनगृह, निधि युक्त हो जायेगा।
महापुण्यशाली होगा, जो चन्द्र चरण में आयेगा।।९।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभ जनन्या स्वर्ण कलश

नवम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
विविध कमल पुष्पों से सुरभित, महा सरोवर जो देखा।
लक्षण सहस युक्त वसु होगा, ऐसा आगम में लेखा।।
जन-जन को संतोष प्रदाता, होगा सद्बुद्धि धारक।
दसवें सपने का फल प्रभुवर, मैं भी पाऊँ भव तारक।।१०।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या कमल युक्त सरोवर

दशम स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
निस्सीम लहर युत महा सिंधु, देखा है तुमने जिन माता।
महासिंधु सम सुख का कारक, गहन बुद्धि निज पर ज्ञाता।।
ग्यारहवां सपना भविजन को, हित उपदेशी कहलाता।
जो जिन चन्द्र चरण को पाये, वह भवदधि को तिर जाता।।११।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभ जनन्या महासागर

एकादश स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घ निर्व. स्वाहा।।
बारहवें सपने में देखा, रत्न जड़ित इक सिंहासन।
इसका फल है अखिल विश्व में करे सुशोभित जिन शासन।।
नर, सुर, नाग, खगेन्द्र, शक्र, यति सभी चरण में सिर नावें।
हे जिन चन्द्र यही फल पाकर, हम भी भवदधि तिर जावें।।१२।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या रत्नजड़ित सिंहासन

द्वादश स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
तेरहवें सपने में देखा, देव विमान मनोहारी।
देव समूह सेवा करि जिन की, पायें यश मंगलकारी।।
दिव्य भोग वैभव के भोक्ता, होंगे चन्द्रनाथ स्वामी।
जिन चरणों की पूज रचाकर, हम भी बने मोक्षगामी।।१३।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या देव विमान त्रयोदश

स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
नागेन्द्र भवन को भू से निसृत, देखा चउदस सपने में।
कर्मबन्ध के तोड़ जाल को, वास करेगा अपने में।।
तीन ज्ञान का धारी अर्थ से, होगा शुद्ध आत्म ज्ञानी।
तीन लोक में तीर्थंकर सी, नहिं रखता कोई शानी।।१४।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या नागेन्द्र भवन

चतुर्दश स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
पन्द्रहवें सपने में देखी, रत्नों की राशि भारी।
नंत गुणों का महा पिण्ड वह, होगा जग में सुखकारी।।
भक्तिभाव से युक्त हो भविजन, उसका आश्रय पायेंगे।
सच मानों वे मोक्ष मार्ग बढ़, उन जैसे बन जायेंगे।।१५।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या रत्नराशि

पंचदश स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
सोलहवें सपने में माँ ने लखि निर्धूम वन्हि ज्वाला।
जिसका फल है परम पुरुष वह, होगा धवल ध्यान वाला।।
कर्मेंधन को ध्यान अग्नि से शीघ्र जला शिव पायेगा।
चन्द्र चरण की भक्ति करे जो भव दुःख से बच जायेगा।।१६।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जनन्या निर्धूर्म

अग्नि षोड़श स्वप्न फल प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

महार्घ

सुर कुंजर से निर्धूम अग्नि तक, सोलह ये सपने देखे।
अल्प बुद्धि से कहे सुफल यहाँ, जैसे हैं आगम लेखे।।
सपनों के फल को पाने जो, भविजन अर्घ चढ़ायेगा।
निर्वांछक होगा सद् दृष्टि, तो भवदधि तिर जायेगा।।

ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य जनन्या ऐरावत गजराज

आदि निर्धूम अग्नि पर्यंत षोड़श स्वप्न फल प्राप्ताय जिन
चरणाग्रे महाअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।
तृतीय वलये पुष्पांजलि क्षिपेत्

तृतीय वलय

जन्म के दस अतिशयों के दस अर्घ

-: दोहा :-

दस अतिशय शुभ जन्म के, प्रगटे श्री भगवान।
भविजन के भय शोक के, हारक कृपा निधान।।
कामदेव का रूप तो राग सहित कहलाय।
तीर्थंकर का रूप वृष, अतिशय युत सुखदाय।।१।।
ऊँ ह्रीं श्री देहरा स्थित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य अतिशय रूपगुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
पुष्पों की शुभ गंध नित, कामोत्पादक जान।
जिनवर के शुभ वदन की, सहज गंध अमलान।।२।।
ऊँ ह्रीं श्री देहरा स्थित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य सुगन्धित तन गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
मन वच तन से नर यदि, कुछ भी श्रम कर लेय।
श्वेद सहित तन होय तब, जिनवर तन निस्वेद।।३।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य निःस्वेद गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

परम शुद्ध आहार को, ग्रहण करें तीर्थेश।
निहार रहित नित ही रहें, जिनवर गुण सविशेष।।४।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य अनिहार गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
हरि, हलधर, चक्रेश, गौ, महत सुबल सुखधाम।
तीर्थंकर तन अतुल बल, धरम चरण गत काम।।५।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य अतुलबल गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
हितमित प्रिय सु वचन शुभ, है सबको सुखकार।
अतिशय जिनवर का महत, सब गुण का आधार।।६।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य हितमित प्रिय वचन गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
तीर्थंकर का सुभग तन, रक्त रहित सुखकार।
रुधिर धवल हो दुग्ध सम, अतुल प्रेम साकार।।७।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य श्वेत रुधिर गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।
लक्षण सहस जु आठ तन, गुण निधान प्रकटाय।
लक्षण व्यंजन सर्व मिति, सुन्दरता अधिकाय।।८।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थिति श्रीचन्द्रप्रभ जिनेद्रस्य सहस्र अठोत्तर शुभ लक्षण गुण प्राप्ताय अर्घ निर्व. स्वाहा।।
तन सुन्दर तीर्थेश का, सम चतुस्र संस्थान।
नाम कर्म का सुफल यह, मिली देह अमलान।।९।।
ऊँ ह्रीं श्री देहरा स्थित चन्द्रप्रभ जिनेद्रस्य सम चतुस्र सस्थान गुण प्राप्ताय अर्घ निर्व. स्वाहा।।
संहनन जिन तीर्थेश का, वज्र वृषभ नाराच।

अस्थि वैष्टन कील सब, मान वज्र की साँच।।१०।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य वज्र वृषभ नाराच संहनन गुण प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

महार्घ

दोहा

अतिशय रूपादिक कहे द्वि पंच जग विख्यात।
जो नित पूजे भाव से,पावे उत्तम गात ।।

ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ, जिनेन्द्रस्य दश।
अतिशय गुण प्राप्ताय महाअर्घं निर्व. स्वाहा।।

चतुर्थ वलये पुष्पांजलि क्षिपेत्

(चतुर्थ वलय)

मूल गुणों के अट्ठाईस अर्घ

तर्ज:- रे मन भज ले।

तुम हिंसा सकल निवारी, मन में अति शुचिता धारी।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१।।
ऊँ ह्रीं श्री अहिंसा महाव्रत धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनिवरभ्यो नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।
मुनि मृषा वचन सब छोड़े, है सत्य मार्ग मन जोड़े।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।२।।
ऊँ ह्रीं श्री सत्य महाव्रत धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनिवरेभ्यो नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।
तुम चौर्य भाव निरवारी, हो अचौर्य महाव्रत धारी।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।३।।
ऊँ ह्रीं अचौर्य महाव्रत धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनिवरभ्यो नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।
अब्रह्म भाव सब त्यागे, तुम निज में ही अनुरागे।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।४।।
ऊँ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्य महाव्रत धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनिवरेभ्यो नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।
तुम सकल परिग्रह छोड़े, रागादिक नाते तोड़े।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।५।।
ऊँ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनिवरभ्यो नमः अर्घ निर्व. स्वाहा।।

पाँच समितियों के ५ अर्घ

मुनि ईर्या समिति पालें, चउ कर मही लखि नित चालें।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।६।।
ऊँ ह्रीं ईर्या समिति सहिताय श्री
चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

हित मित प्रिय भाषा बोलें, नित वचन आपने तौलें।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।७।।
ऊँ ह्रीं भाषा समिति धारकाय श्री
चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

अंतराय दोष सब टालें, मुनि एषण समिति सम्हालें।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।८।।
ऊँ ह्रीं एषणा समिति सहिताय श्री
चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

उपकरण उठाते धरते, शोधन भूमि का करते।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।९।।
ऊँ ह्रीं आदान-निक्षेपण समिति सहिताय श्री
चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

उत्सर्ग समिति नित पालें, भू निरखि-निरखि मल त्यागें।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१०।।
ऊँ ह्रीं उत्सर्ग समिति सहिताय श्री
चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घ निर्व. स्वाहा।।

पंचेन्द्रिय विजय के ५ अर्घ

वसुविधि स्पर्शन इन्द्री, तुम जीते महा अनिन्द्री।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।११।।
ऊँ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विजेताय श्री

चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

रसना इन्द्रिय तुम जीते, स्वातम रस नित ही पीते।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१२।।
ऊँ ह्रीं रसना इन्द्रिय विजेताय श्री
चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

शुभ-अशुभ गंध जग माहीं, तुम विजय घ्राण अख पाई।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१३।।
ऊँ ह्रीं घ्राण इन्द्रिय विजेताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

जग दृश्य दिखे मन भावन, तुम नयन विजयी शुभ पावन।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१४।।
ऊँ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विजेताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

शुभ-अशुभ शब्द इहलोके, तुम विजय कर्ण अवलोके।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१५।।
ऊँ ह्रीं कर्ण इन्द्रिय विजेताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।

षट् आवश्यकों के छः अर्घ

तुम समता भाव सम्हारे, द्वि राग-द्वेष निरवारे।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१६।।
ऊँ ह्रीं समता आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।।

जिनवर की स्तुति करते, जिन गुण निज उर में धरते।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, 'शिव मारग' परम सहाई।।१७।।
ऊँ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।

चउबीस तीर्थ जिनवंदन, मुनिराज तीर्थ जिन वंदन।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग' परम सहाई।।१८।।
ऊँ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
स्वाध्याय नित्य तुम करते, अज्ञान तिमिर को हरते।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।१९।।
ऊँ ह्रीं स्वाध्याय आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
प्रतिक्रमण शब्द उच्चारें, निज संयम नित्य संभारें।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२०।।
ऊँ ह्रीं आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
व्युत्सर्ग नित्य तुम पालें, काया से मोह निवारें।
मुनिराज जजुँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२१।।
ऊँ ह्रीं व्युत्सर्ग आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।

सप्त विषेश गुणों के सात अर्घ

दो-तीन-चार शुभ मासा, कच लोंच करें सुपवासा।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२२।।
ऊँ ह्रीं कचलोंच आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
नहिं दंत राग हित माजैं, निज गुण से निज को साजैं।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२३।।
ऊँ ह्रीं अदंतधावन आवश्यक गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
स्नान मुनि नहिं करते, निज आतम में नित रमते।

मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२४।।
ऊँ ह्रीं अस्नान विशिष्ट गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
वे नग्न दिगम्बर रहते, गर्मी सर्दी नित सहते।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२५।।
ऊँ ह्रीं दिगम्बरत्व विशिष्ट गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
कर पात्र आहार लें ठाड़े, कर्मों के मूल उखाड़े।
मुनिराज जजूँ सुखदाई शिव मारग परम सहाई।।२६।।
ऊँ ह्रीं स्थिति भोजन विशिष्ट गुण सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
भूमि शिल पाटा सोवें, वे कर्म कालिमा धोवें।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२७।।
ऊँ ह्रीं क्षिति शयन विशिष्ट गुण सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।
वे लेते शुद्ध आहारा, अपने कर में इक बारा।
मुनिराज जजूँ सुखदाई, शिव मारग परम सहाई।।२८।।
ऊँ ह्रीं एक भुक्ति विशिष्ट गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।

दोहा

शिव सुख साधक बीस अठ, कहे सुगुण भगवान।
निश्चय वा व्यवहार से, धरि पावें निर्वाण।।२९।।
ऊँ ह्रीं अष्ठ विशंति मूल गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनिन्द्राय नमः महाअर्घं निर्व. स्वाहा।

पंचम वलये पुष्पांजलि क्षिपेत्

पंचम वलय

पंचम वलय में 12 तप,10 धर्म व 3 गुप्तियों के पच्चीस अर्घ

12 तप के12अर्घ

खाद्य स्वाद्य अरु लेह्य पेय से, चतुर्विधि भोजन होता।
उन्हें त्याग कर संयम रस से, अनशन बीज सदा बोता।।
वे श्री चन्द्र नाथ मुनि अनशन, पक्ष मास तक लीन रहे।
मैं भी ऐसी शक्ति पाऊँ, कर्म कालिमा सभी दहे।।
ऊँ ह्रीं अनशन तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।1।।

उदर पूर्ण भोजन करने से आलस तन को दुःख देता।
स्वाध्याय, समता, प्रतिक्रम में, करि ह्रास शुभ हर लेता।।
ऊनोदर तप के करने से, आत्म शक्ति जागृत होवें।
शांत मूर्ति वे चन्द् नाथ मुनि, कर्म कालिमा सब धोवें।।
ऊँ ह्रीं ऊनोदर तप सहिताय श्री चन्द्र प्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।2।।

राग-द्वेष निवारण हेतु, परम प्रतिज्ञा जो धारें।
वृत्ति संख्या तप साधन कर, इच्छाओं को जो मारें।।
पूर्व पुण्य की करें परीक्षा, इह विधि दुर्द्धर तप करके।
सभी कर्म भागे तब उनके, चन्द्र प्रभु का तप लखके।।
ऊँ ह्रीं वृत्ति परिसंख्यान तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनीन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।3।।

लवण, तेल, घृत, खांड़, दूध, दधि का वे क्रमशः करते त्याग।
खट्टा, मीठा, खारा, कड़वा, चटपट से भी छोड़ा राग।।
कभी एक दो तीन चार वा पाँच सभी रस तज देते।
धन्य मुनिश्वर चंद्रप्रभु वे, आतम में निज रस लेते।।

ऊँ ह्रीं रस परित्याग तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।4।।

सरिता तट पर कभी गुहा में, शैल शिखर पर तप करते।
तरुतल वास कभी करते हैं, कभी मशान में जप जपते।।
धारें आसन अविचल वे मुनि, चन्द्रनाथ जिनवर स्वामी।
आसन जप करि आशा जीतूँ, बनूँ पूर्ण में निष्कामी।।
ऊँ ह्रीं विविक्त शय्याशन तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
मुनीन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।5।।

तीक्ष्ण ग्रीष्म ऋतु में वे मुनिजन, तपते आतापन का योग।
शीत ऋतु में सरिता तट पर, तप से भोगें चेतन भोग।।
पावस ऋतु में तरु तल निवसें, नीर बिन्दु तन को साले।
काय क्लेश शुभ करें तपस्वी, निज में निज के रखवाले।।
ऊँ ह्रीं कायक्लेश तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।6।।

गर प्रमाद अज्ञान भाव वश, जो भी दोष हुए भारी।
सूक्ष्म दृष्टि से उसे खोज वे, लेते हैं नित अविकारी।।
सिद्ध निजातम साक्षी में वे, आलोचन करते दिन रैन।
सर्व दोष निर्मुक्त चन्द्र जिन, निज में ही पाते सुख चैन।।
ऊँ ह्रीं प्रायश्चित तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।7।।

सम्यक दर्शन ज्ञान चरण की, विनय सदा करते मन में।
तप वर्धक हो विनय भाव , उपचार विनय होवे तन में।।
ऐसे वे गुरु चन्द्रनाथ मुनि, विनय तपोत्तम के धारी।
उन सम विनय भाव पाने को, करूँ विनय निज हितकारी।।
ऊँ ह्रीं विनय तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय

नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।8।।

आचार्य आदि हैं दश विधि मुनि गण उनके तप में साधक हैं।
उन्हें दूर करते हैं तत्क्षण, जो शिव मग में बाधक हैं।
वैय्यावृत्ति संयम तप वा, धर्म ध्यान की सहकारी।
मोक्ष मार्ग की साधक प्रेरक, भव्य जनों को सुखकारी।।
ऊँ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।9।।

निज अंतस वा पर अंतस के, भ्रम तम के जो हारक हैं।
स्वपर भेद विज्ञान प्रदायक, निज वैभव के कारक हैं।।
अंतरंग तप स्वाध्याय फल, चन्द्रनाथ मुनि ने पाया।
उस केवल बोधि को पाने, नाथ चित्त मम अकुलाया।।
ऊँ ह्रीं स्वाध्याय तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।10।।

देहादि पर सकल द्रव्य से, ममत्व योग से निरवारा।
राग-द्वेष भी राग-द्वेष, कर उन योगी से जब हारा।
उत्सर्ग काय करके वे मुनि उपसर्ग सहें समता धारी।
चन्द्रनाथ मुनि वर के पद में, धोक त्रिकाल रहे म्हारी।।
ऊँ ह्रीं कायोत्सर्ग तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।11।।

आर्त रौद्र कुध्यान सर्व तजि, धर्म ध्यान में नित रहते।
शुक्ल ध्यान के चार भेद से, कर्म कालिमा जो दहते।।
चन्द्रनाथ मुनिवर के पद में, निज का ध्यान लगाऊँगा।
अरि रज रहस नाश करिके, निज में शाश्वत रम जाऊँगा।।
ऊँ ह्रीं ध्यान तप सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।12।।

दश धर्म के दश अर्घ

करे कोप कोई वचन दुष्ट बोले, क्षमा भाव उर में सरस मिष्ट घोलें।
क्षमा ढाल लेके निज को संभारे, खड़ग साम्य काले करम को संहारे।
ऊँ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।13।।

ज्ञानादि गुण का नहिं मान मन में, विनय भाव धरते जो नितही स्तवन में।
मार्दव गुण को जो निज में निहारें, अहंकार अरि को वो घर से निकारें।।
ऊँ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।14।।

श्री चन्द्र देवा, माया निवारी, आर्जव सरलता चित्त में उतारी।
करम आठ नाशें सुगुण कोष पाया, इसी हेतु हमने यह अर्घ चढ़ाया।।
ऊँ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।15।।

आरोग्य, यश वा नहीं लोभ धन का, भरता न गड्ढा कभी तृषित मन का।
साम्य भाव धरिके सर्व लोभ नाशा, परम शौच हो धर्मा निज में निवासा।।
ऊँ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।16।।

श्री चन्द्र स्वामी महा सत्य धारी, रोषादि कारण तजे निर्विकारी।
सत्यार्थ वृष को चिन्मय बनाया, इसी हेतु पद में सिर ये झुकाया।।
ऊँ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।17।।

इन्द्रिय दमी वे जिनदेव स्वामी, सर्व जीव रक्षक स्वपर भेद ज्ञानी।

निर्मोह ध्याता निजानन्द लीना, साधु व त्यागी सर्व हित प्रवीना।।
ऊँ ह्रीं उत्तम संयम धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।18।।

अनशनादि तप को धरैं मुनि विरागी, चिदानन्द भोगी निजानंद रागी।
महा तप सुधर्मा धरैं नित्य भोगी क्षण में नशावे कर्म रज नियोगी।।
ऊँ ह्रीं उत्तम तप धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।19।।

अभय दान अमृत का आहार देवें, ज्ञानोषधि से भव रोग खोवें।
परम त्याग धर्मी परम तत्व ज्ञानी, सरव त्याग करके करें कर्महानि।।
ऊँ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।20।।

पर वस्तु किंचित नहिं मम कदापि, पर वस्तु ग्राहक हो नित्य पापी।
उत्तम आकिंचन धरम भाव मेरा, अखिल गुण विकासी बनूं स्वयं चेरा।।
ऊँ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।21।।

योगत्रय से सदा शीलधारी, नारि अंग लखि भी न हो मन विकारी।
निज ब्रह्म में ही सदा लीन रहते, कर्म काठ राशि को दिन रात दहते।।
ऊँ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म धारकाय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।22।।

तीन गुप्ति के तीन अर्घ

मन मध्य नाना विकल्प नित्य आवें, कर्म राशि को वे निश दिन बढ़ावें।
मनोगुप्ति धारी मुनि आत्म ज्ञानी, ध्यानाग्नि वाले करें-कर्म हानि।।

ऊँ ह्रीं मनोगुप्ति सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।23।।

वचनों का व्यापार परिचय बढ़ाता, राग-द्वेष बल से भव में भ्रमाता।
वचन गुप्ति धारी महा सौख्य कारी, नमूं मैं गुरु को सदा निर्विकारी।।
ऊँ ह्रीं वचन गुप्ति सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।24।।

नासाग्र दृष्टि धरैं नित्य साधू, काय गुप्ति धारी को मैं नित अराधूं।
जिनबिम्बवत् काय गुप्ति के धारी, जजुँ मैं गुरु को समता प्रचारी।।
ऊँ ह्रीं कायगुप्ति सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।25।।

महा अर्घ

चन्द्रनाथ तुमने मुनि होकर, दश धर्मों को धारा था।
तीन गुप्ति धरि कर्म सेन्य को, निर्मम हो संहारा था।।
मैं भी तव पद ध्यान को धर कर, वृष अमृत का पान करूँ।
मोक्ष धाम नहिं पाया जब तक, चन्द्र नाथ गुण गान करूँ।।
ऊँ ह्रीं द्वादश तप धर्म च गुप्ति त्रय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनीन्द्राय
नमः महा अर्घं निर्व. स्वाहा।।1।।

षष्टम् वलय पुष्पांजलि क्षिपेत्/क्षिपामि

षष्टम् वलय

केवल ज्ञान के 10 अर्घ

तर्ज:- नाम तिहारा तारण हारा.....।

केवल ज्ञानी का ये अतिशय, शत योजन नित्य सुभिक्ष रहे।
चारों दिशि की परिधि चउशत मंगलकारी देव कहे।।
जल फलादि सब द्रव्य मिलाकर, उस गुण को अर्घ चढ़ाऊँगा।
सकल कर्म को घाति स्वयं में, शिव मग कदम बढ़ाऊँगा।।
ऊँ ह्रीं गव्यूति शत चतुष्टय अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।1।।
चार घातिया कर्म नाश करि, गगन गमन ही करते हैं।
बीस हजार हाथ ऊँचे वे, सामान्य भूमि से रहते हैं।।
पाप कर्म ही भारी जग में, भव-भव में भटकता है।
उसे नाश कर दिया है जिसने, वह शिव पद पा जाता है।।
ऊँ ह्रीं गगन गमन अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।2।।
जिनवर का शुभ गमन आगमन प्राणी वध से रहित सदा।
समवशरण व विहार काल में, जीव घात नहिं होत कदा।।
सर्व सावद्य रहित जिनवर की, जो भी पूज रचायेगा।
आज नहिं तो कल वह निश्चित, जिनवर ही बन जायेगा।।
ऊँ ह्रीं सर्व प्राणीअवध अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।3।।
संसारी प्राणी तो निशदिन, क्षुधा नाशने कवल गहे।

किन्तु केवली भगवन् नित ही, आतम रस को नित्य लहें।।
कवलाहार केवली के, नहीं कभी भी होता है।
जो मानें जिन कवलाहारी, भवदधि में नित रोता है।।
ऊँ ह्रीं कवलाहार रहित परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।4।।
केवली जिन के उपसर्ग आदि भी, नहिं कभी भी होता है।
जो जिन पर उपसर्ग मानता, बीज दुःखों का बोता है।।
सत्तागत वे अशुभ कर्म भी, शुभ साता मय हो जाते।
जो श्री चन्द्र की पूज रचावे, कर्म कालिमा धो जाते।।
ऊँ ह्रीं सर्वोपसर्ग रहिताय परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।5।।
हे प्रभु आनन एक आपका, चऊँ दिशि में नित प्रति भासे।
केवल ज्ञान का है अतिशय ये, भविजन को नित अवभासे।।
हे जिनवर तुम ब्रह्म यथारथ, आतम के नित ज्ञाता हो।।
लोका लोक निहारी भगवन्, मोक्ष मार्ग के दाता हो।।
ऊँ ह्रीं चउदिशि चतुरानन प्रतिभासितातिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।6।।
जग में जितनी भी विद्या हैं, जिनवर सबके ईश्वर हैं।
अखिल जगत के महा विधायक, सिद्ध क्षेत्र महीश्वर हैं।।
सौ इन्द्रों से वन्दित हे जिन, चन्द्र चरण उर धारूँगा।
संयम ले तजि सकल असंयम, नर भव आज सुधारूँगा।।
ऊँ ह्रीं सर्व विद्या परमेश्वर परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।7।।
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, परमौदारिक होता तन।
छाया नहिं पड़ती तब तन की, दीप्ती से लाजें रवि गण।।

परम एश्वर्य महा सुख दाता, चन्द्र नाथ उजियारे हो।
कोई चाहे कुछ भी मानें, मेरे एक सहारे हो।।
ऊँ ह्रीं परमौदारिक तन सुशोभिताय परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ मुनिन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।8।।

निर्निमेष तव चितवन जिनवर, राग-द्वेष की परिहारी।।
वीतराग सवर्ज्ञ हिंतकर, घाति कर्म चतु निरवारी।।
व्यवहार रूप में अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा कहलाते।
निश्चय में निज ज्ञाता दृष्टा, ज्ञानी जन नित बतलाते।।
ऊँ ह्रीं निर्निमेष चितवन परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।9।।

जिनवर के नख केश न बढ़ते, यह भी एक अतिशय जानो।
पूर्ण ज्ञान के प्रकट होत ही, तन में वृद्धि नहिं हानो।।
हे जिन चन्द्र चरण रज तेरी, मस्तक आज लगाऊँगा।
तव तन के साक्षात् परस वत, हो गद्-गद् मोद् मनाऊँगा।।
ऊँ ह्रीं नख केश वृद्धि रहिताय परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।10।।

महा अर्घ

केवल ज्ञान के दश अतिशय ये, भविजन से नित अर्चित हैं।
तीन लोक में सुख के कारक, महा पुण्यवत चर्चित हैं।।
मैंने सद श्रद्धा भक्ति वश, चित्त समर्पित कर दीना।
हे चन्द्रनाथ तब चरण बिना मैं, यथा नीर बिन है मीना।।
ऊँ ह्रीं श्री केवल ज्ञान सम्बन्धित सर्व परम अतिशय सहिताय श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः महा अर्घं निर्व. स्वाहा।।
चन्द्रनाथ के चरण में वसुविध अर्घ चढ़ायें।
पूजें भक्ति भाव से स्वर्ग मोक्ष सुख पायें।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपामि/क्षिपेत्

सप्तम् वलय पुष्पांजलि क्षिपामि

सप्तम् वलय

देव कृत चौदह अतिशयों एवं अन्य 26 अर्घ

ओम कारमय जिनवर वाणी, भव्य जनों को जो हितकारी।
अर्द्ध मागधी भाषा जिनकी, तिमिर हरण अरु मंगलकारी।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय अर्द्ध मागधी भाषा गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।1।।

अतिशय दूजा देव रचित है, मिश्र भाव सब में होवें।
जनम जात बैरी पशु गण भी, शत्रु भाव को नित खोवें।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय सर्व जन मैत्री भाव गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।2।।

षट् ऋतु के फल फूल वृक्ष दें, एक साथ हर्षित होकर।
सम्पूर्ण क्षेत्र मंगलमय होता, अपना सारा दुःख खोकर।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय सर्व ऋतु फलादि शोभित तरू गुण प्राप्ताय श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।3।।

निर्मल दर्पण वत् हो पृथिवी, रत्नमयी शुभ सुखकारी।
प्रभु विहार में देव, शक्र, नर करें मोद अतिशय भारी।।
ऊँ ह्रीं श्री देवो पुनीत अतिशय रत्नमयी पृथ्वी गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।4।।

पवन देव नित ऋद्धि बल से, शीतल अनिल चला कर के।

प्रभू विहार के योग्य सु अवसर, अतिशय पुण्य कमा करके।।
ऊँ ह्रीं श्री देवो पुनीत अतिशय विहारानुकुल वायुत्व गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।5।।

जिनवर का सानिध्य प्राप्त कर, परमानन्द सब पाते हैं।
चन्द्र चरण में अर्घ चढ़ाकर हम भी अति हर्षाते हैं।।
ऊँ ह्रीं श्री देवों पुनीत अतिशय परमानंद गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।6।।

कंटक धूली आदि रहित निर्बाधक समभूमि होती।
प्रभु विहार से सारी पृथ्वी, मन में अति हर्षित होती।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय निर्वाधित पृथ्वी गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।7।।

गंधोदक की वर्षा नभ से मेघ कुमार सदा करते।
देव समूह जिनपद भक्ति वश, भविजन की बाधा हरते।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय गंधोदक वृष्टि गुण प्राप्ताय श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।8।।

वे शत पंच विंशंति अम्बुज, स्वर्ण कांतिमय प्रभु तल में।
रचते धनद भक्ति वश तत्क्षण, पदम नवीना हर पल में।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय पाद न्यास कमल रचना गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।9।।

शाली आदि सभी धान्य की, खेती रहती खूब फली।
भव्यों के तन-मन सब हर्षित, विकसित होती हृदय कली ।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय नम्रशालि आदि गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।10।।

शरत्काल में मेघ हीन नभ, स्वच्छ व्योम है अति भाता।

सर्व उपद्रवहीन काल वह, भव्यों को है हर्षाता।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय शरदकाल वत निर्मल गगन गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।11।।

दशों दिशायें निर्मल होकर, जिनवर का गुणगान करें।
रोग, शोक, भय, पीड़ा नाशक, अतुलित सुख और शान्ति वरें।।
ऊँ ह्रीं देवो पुनीत अतिशय निर्मल दिग्भागत्व गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।12।।

आह्वानन करते सुर गण तब, मधुर वचन मुख से भाषें।
जिन गुण गावो, भक्ति रचाओ, मोह तिमिर सबके नाशें।।
ऊँ ह्रीं श्री देवो पुनीत अतिशय आह्वान कर्ता यक्षेन्द्र इत्यादि गुण प्राप्ताय श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।13।।

जिनवर के आगे-२ ही धर्म चक्र गतिशील रहे।
आरे सहस्र दिपें जिसमें, जिन शासन का यशगान कहे।
ऊँ ह्रीं श्री देवो पुनीत अतिशय धर्मचक्र प्रवर्त गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।।14।।

आठ प्रतिहार्य के आठ अर्घ

हे जिन चन्द्र निकटता तेरी, शोक रहित तरु को करती।
भव्यों के भव रोग शोक को, भक्ति क्षण भर में हरती।।
ऊँ ह्रीं अशोक वृक्ष प्रतिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**15**।।

मणि मुक्ता रत्नों से निर्मित, चन्द्र प्रभु का सिंहासन।
जीव मात्र का है हितकारी, एक मात्र ये जिन शासन।।
ऊँ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**16**।।

चन्द्रनाथ जिनदेव शिरोपरि, तीन छत्र नित ही सोहें।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, भव्य जनों का मन मोहें।।
ऊँ ह्रीं छत्र त्रय प्रातिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**17**।।

भूत, भविष्यत, वर्तमान के भवि के सप्त जनम झलकें।
भामण्डल जिन चन्द्र नाथ का, अद्भुत तेज लिए चमके।।
ऊँ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**18**।।

दिव्य ध्वनि सर्वज्ञ देव के सर्वांग प्रदेशों से खिरती।
भक्ति से जो पान करे जो, मोह तिमिर उसका हरती।।
ऊँ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**19**।।

पुष्प की वृष्टि समवशरण में, होती हर क्षण सुखदायी।
भव्य जीव भी सुमन सुमन वत, वन जाते हैं अनुयायी।।
ऊँ ह्रीं पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय

श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**20**।।

जिनेन्द्र देव के ऊपर हर क्षण, चोंसठ चँवर ढुरावें यक्ष।
पुण्यशील हैं वे नर पुंगव, भक्ति में रहते जो दक्ष।।
ऊँ ह्रीं चतुषष्टि चँवर प्रातिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**21**।।

देव दुंदभि समवशरण में, बजे निरन्तर मनहारी।
चन्द्रनाथ संदेश सुनाती, मुनि वृष की महिमा न्यारी।।
ऊँ ह्रीं देव दुंदुभि प्रातिहार्य सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**22**।।

अनंत चतुष्टय के चार अर्घ

–: दोहाः–

आवरण ज्ञान का नाश करि, प्रकटा केवन ज्ञान।
अनन्त ज्ञान जिनवर लहि, हुए परम भगवान।।
ऊँ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण सहिताय।
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**23**।।

दृगआवृत कारण नशा, चन्द्र नाथ जिनदेव।
जो जिनपद पूजा करे, बने सिद्ध स्वयमेव।।
ऊँ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण सहिताय
श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**24**।।

सर्व जीव को दुःख मयी, मोह कर्म जंजीर।
अनन्त सुखी वे बन गये, कर्म नाशि जिनवीर।।
ऊँ ह्रीं अनन्त सुख गुण सहिताय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।**25**।।

अतुलित बल जिन में महा, अन्तराय करि नाश।
नंतवीर्य मैं भी लहूँ, चन्द्र चरण करि वास।।
ऊँ ह्रीं अनन्त बल गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
अर्घं निर्व. स्वाहा।।२६।।

महाअर्घ

केवल ज्ञानी गणधर स्वामी, ऋद्धि धारी महायती।
पूज रचाऊँ, उनको ध्याऊँ, पाऊँ निर्मल महामती।।
चन्द्रप्रभु के समवशरण में, पूज्य पुरुष जो साजे हैं।
यथा योग्य मैं सबको पूजूँ, लहूँ सुगुण वसु ताजे हैं।।
ऊँ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकरस्य समवशरण मध्ये विराजित
सर्व केवली गणधर, ऋद्धि धारक सर्व मुनिभ्यां नमः
महा अर्घ निर्व स्वाहा।।
-: पुष्पांजलि क्षिपेत् :-

अष्टम वलये परि पुष्पांजलि क्षिपेत

अष्टम वलय

सिद्धों के आठ मूल गुणों के आठ अर्घ

दोहा

**कर्म मोहनीय जगत में , दुःख दायक भगवान्।
पूर्ण सुखी तुम बन गये, किया मोह अवसान।।
ऊँ ह्रीं अनन्त सुख गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।१।।
ज्ञानावरणी कर्म ने, नाशा निजी स्वभाव।
कर्मनाश तुम बन गये, नंत ज्ञान ले भाव।।
ऊँ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।२।।
दर्शनावरणी छेद कर, पायो दर्श अनन्त।
जिसकी महिमा चन्द्र जिन, कभी न होती अंत।।
ऊँ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।३।।
नाम कर्म का नाश करि, पायो गुण सूक्ष्मत्व।
कर्म कालिमा धुल गयी, पाकर के निज स्वत्व।।
ऊँ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निव. स्वाहा।।४।।
अगुरु लघु गुण हो प्रकट, गोत्र कर्म करि नाश।
ऊँच नीच के भेद का, नहीं फिर मिलता त्रास।।
ऊँ ह्रीं अगुरु लघु गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घ निर्व. स्वाहा।।५।।
अवगाहन गुण पा गये, आयु कर्म करि अंत।**

सिद्ध बने तन घात वे, रहते काल अनन्त।।
ऊँ ह्रीं अवगाहनत्व गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।६।।
अव्याबाधी तुम बने, कर्म वेदनीय अंत।
चन्द्र चरण में वास नित, ऐसा होऊँ संत।।
ऊँ ह्रीं अव्याबाधत्व गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।७।।
अन्तराय के नाश से, वीर्य नंत प्रकटाय।
कर्म कालिमा नाश कर शिवपुर पहुँचे जाय।।
ऊँ ह्रीं अनन्त बल गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।।८।।

; **महार्घ**

ज्ञानावरणादि कर्मों को नाशि, चन्द्र जिन मुक्त हुए।
अनादि काल का भ्रमण त्याग, भव शाश्वत पद ले सिद्ध हुए।।
अष्टम तीर्थंकर पद पा तुमने जिनशासन को चमकाया।
निज आतम का वैभव पाने, दास चरण में अब आया।।
ऊँ ह्रीं श्री सिद्ध स्वरूप श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य अष्ट गुण
प्राप्ताय महा अर्घं निर्व. स्वाहा।।

जयमाला

दोहाः-

तीन लोक के ईश हो, चन्द्रनाथ भगवान।
देहरा में तव पद जजूँ, तारो कृपा निधान।।

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु जिनन्दा।
तुम्हीं विश्व स्वामी हो, देहरा के चंदा।।
महासेन नृप के तुम्हीं पूत प्यारे,
श्री मात लक्ष्मणा की आँखों के तारे।।
पद्मनाभ के भव में पद तीर्थ बाँधा।
चारित्र धरकर निजातम को साधा।।
वैजयन्त स्वर्ग से चय कर तुम आये।
चन्दपुरी में भी अतिशय दिखाए।।
सोनागिरि में समवशरण आया।
नंग अनंग ने शिवपद है पाया।।
समंत भद्र मुनि का सही मान राखा।
सत्य कथन ये भी आगम में भाखा।।
चन्द्रवाड़ में भी तो महिमा दिखाई।
यमुना की धारा में तव मूर्ति पाई।।
देहरा तिजारा में आनंद छाया।
चमत्कार तुमने यहाँ पर दिखाया।।
श्रावण सुदी की दशमी सुभाई।
गुरुवार को गुरुतर महिमा बताई।।
तन मन के रोंगों को तुम ही नसाते,
धनहीन धन को गुणी गुण को पाते।।
तव नाम लेकर मिटे कष्ट सारे।
चँदा समां नहिं हितकर हमारे।।
भूतप्रेत बाधा तो पल में भगाते।
अनाथ अकिंचन भी मोद मनाते।।
तेरा नाम मन से जिसने लिया है।

उसने धरम का अमृत पिया है।।
तव नाम भक्तों का अनुपम सहारा।
तेरे बिन फिरे वह तो भव भव में मारा।।
मम मन कमल के तुम्हीं ईश चन्दा।
तेरे नाम लेते मिटे सर्व द्वंदा।।
मोहतम नाशक तुम्हीं नाथ चंन्दा।।
मन को सुध्यावे मिले नंत नंन्दा।।
तुम्हीं पंच कल्याणकों को है पाया।
तुम्हीं ने है चंदा वसु कर्म नशाया।।
तुम्हीं मेरे मन के हो भगवान मसीहा।
तुम्हें देखने से मिटे सर्व ईहा।।
तुम्हीं कर्म हर्ता तुम्हीं आत्म सृष्टा।
तुम्हीं विश्वज्ञाता तुम्हीं विश्व दृष्टा।।
तुम्हीं को सदा हम, निज अंतस में ध्यावें।
तुम्हीं को सदा हम अपना बनावें।।
तुम्हीं शरण मंगल हो उत्तम खिवैया।
भव सिंधु तारक तुम्हीं श्रेष्ठ नैया ।।
तुम्हीं मेरी ज्योति तुम्हीं नैन मेरे।
अर्पण है सब कुछ पा चरणों में तेरे।।
तुम्हीं मेरी भक्ति तुम्हीं मेरी पूजा।
तेरे सिवा मेरा नहिं कोई दूजा।।
तेरा नाम लेकर सतियाँ तरी हैं।
तेरी भक्ति से ही निधियाँ मिली हैं।।
तुम्हीं नाथ अंतिम हो मेरे सहारे।

तुम्हीं ने जगत के भव दुःख निवारे।।
तेरी कीर्ति महिमा का नहिं पार पाया।
तुम्हारे चरण में सिर जग ने झुकाया।।
सहस्र लक्ष कोटि सुभक्त तेरे,
किन्तु मैं तो मानूं तुम्हीं ईश मेरे।।
तुम्हारे चरण में हो अंतिम समाधि।
तुम्हारे ही दर पर मिटे भव की व्याधि।।

धत्ता छंद

श्री चन्द्र जिनेशा, नमत सुरेशा, आनंद देता जिनराई।
तव गुण हम गावें, मोद मनावें, कर्म नशावें शिव जाई।।
तव चरण मिले हैं, कर्म हिले हैं, हृदय खिले हैं सुखदाई।
हम अर्घ चढ़ावें, शीश झुकावें निज गुण पावें जिनराई।।
ऊँ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
जयमाला पूर्णार्घं निर्व. स्वाहा।।

-: **दोहा** :-

जिनवर तव गुण नंत हैं, मैं अल्प बुद्धि नादान।
कैसे महिमा गा सकूँ, रखो लाज भगवान।।
पुष्पांजलि क्षिपेत्

आरती-चन्द्रप्रभ भगवान की

शुभतर केवल ज्ञान की, शुद्धातम के यान की।
चलो उतारें आज आरती, देहरा के भगवान की।।
चन्द्रप्रभ भगवान की.....शुभतर ।।१।।
चलो उतारे आज आरती चन्द्रप्रभु भगवान की।।

रत्नदीप का थाल सजा कर, द्वार तुम्हारे आया हूँ।

नयन कलश में प्रासुक जल भी, तव चरणों में लाया हूँ।
हाँ तव.....
देहरा के मेहमान की चन्द्रप्रभ भगवान की । । २ । ।
चलो उतारे आज आरती चन्द्रप्रभु भगवान की।

तेरी आरती करने से प्रभु, संकट सब कट जाते हैं।
हाँ संकट.....
जाप ध्यान चालीसा करके, तीव्र पाप हट जाते हैं,
हाँ तीव्र.....
चंदा के गुणवान की, चन्द्र प्रभु भगवान की।।३।।
चलो अतारें आज आरती चन्द्र प्रभु भगवान की।

श्रद्धा से जो दर पे आये, स्वर्ग संपदा पायेगा,
हाँ स्वर्ग.....

चन्दा का जो ध्यान लगाये, वह चंदा बन जायेगा।
हाँ वह.....
जैन धर्म के शान की, चन्द्र प्रभु भगवान।।४।।
चलो उतारे आज आरती चन्द्रप्रभु भगवान की।

निजानन्द, निर्दोष, महाशुभ, चंदा को जो ध्यायेगा।
हाँ चंदा.....

.
कर्म कालिमा धोकर सारी, निज में निज निधि पायेगा।
हाँ निज.....

वीतराग विज्ञान की, चन्द्र प्रभु भगवान् की । । ५ । ।
चलो उतारें आज आरती देहरा के भगवान की।।

पुण्यार्जक श्रावक

तरष चन्द्र जैन,
प्रवीन कुमार जैन,
अरूण कुमार जैन

गॉधी नगर सरघना
(मेरठ) उ.प्र.

के सौजन्य से
3000 प्रतियॉ
प्रकाशित

पुण्यार्जक श्रावक

परम पूज्य आचार्य श्री
वसुनंदी जी मुनिराज ससंघ के
मानसरोवर (जयपुर) चातुर्मास
2015 के उपलक्ष्य में

चातुर्मास समिति
व सकल दिगम्बर जैन समाज
मानसरोवर जयपुर (राज.)

के सौजन्य से
7000 प्रतियॉ
प्रकाशित